मनोज
कॉमिक्स
मूल्य 7.00
राम-र म और
आकाश का प्रेत
Varun n Arjun
presentation
RAJ COMICS FAN NATION
BRINGING HOME THE JUNOON
RAJ COMICS FAN NATION
RFN
VIJAY KADAM
Arjun N Varun Presents
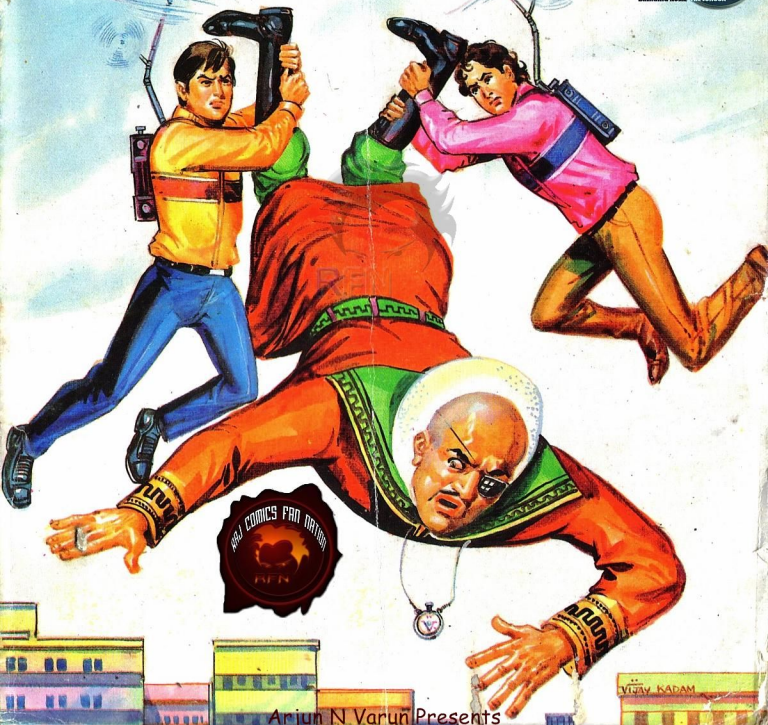
राम-रहीम और आकाश का प्रेत
डबल सीक्रेट एजेन्ट ००५ राम-रहीम सीरिज
लेखक : बिमल चटर्जी
चित्रांकन : दिलीप कदम, हरिशचंद्र चव्हान, त्रिशूल कॉमिक्स

एक बार जब राम-रहीम रात का आखिरी शो देखकर घर वापस लौट रहे थे तो कुछ अज्ञात अपराधियों ने उन्हें घेर लिया।
खबरदार, कोई गलत हरकत करने की कोशिश मत करना राम-रहीम!

राम-रहीम के स्थान पर उन्होंने उनके हमशक्लों को उनके घर भेजा, जिन्हें कर्नल राघव की डांट खानी पड़ी।
खबरदार, जो फिर रात गये घर वापस लौटे।
ज...जी!
अगले दिन चीफ मुखर्जी ने राम-रहीम को अपने ऑफिस में बुलाया और सूचना दी—
शाकाल जिंदा है राम। कल रात ही मुझे उसका फोन आया था।
क्या हमें उसकी ब्लैक फाइल देखने को मिल सकती है चीफ?

फिलहाल तो नहीं। हां, कल वह फाइल मैं तुम्हारे जन्म-दिन पर तुम्हारे घर पहुंचा दूंगा।
ठीक है चीफ! तो अब हम चलते हैं।
अगले दिन शाम को जब चीफ मुखर्जी राम के जन्म-दिन पर उसके घर ब्लैक फाइल लेकर पहुंचे—
खबरदार, कोई भी अपने स्थान से न हिले, वरना सबको भून दिया जायेगा!
क्याऽऽऽ?

कर्नल, तुम्हें भी हमारे साथ चलना है। चलो।
नहीं।

लेकिन संयोग से असली राम-रहीम अपराधियों की कैद से भागकर वहां पहुंच गये।
धड़ाक्! ढिशुम्!
आह...!
उफ!

उस युद्ध में नकली राम मारा गया और नकली रहीम बन्दी बना लिया गया।
बताओ, यह सब क्या चक्कर है?
बताता हूं... बताता हूं!

नकली रहीम से सारी जानकारी प्राप्त कर राम-रहीम फाइल और कर्नल राघव को लेकर उस स्थान की ओर चल पड़े जहां, नकली राम-रहीम को पहुंचने के लिए कहा गया था।
राम भइया, हमारा पीछा किया जा रहा है।
चिंता मत करो। चले चलो।

गन्तव्य स्थान पर पहुंचने पर —
राम भइया! सामने से एक वेन आ रही है। उससे बचकर आगे नहीं निकला जा सकता।
गाड़ी को किनारे पर करके रोक दो। जरूर वे शाकाल के ही आदमी होंगे।

रहीम ने कार को किनारे पर करके रोक दिया।
डैडी! आपको बाहर निकलकर ऐसा जाहिर करना है, जैसे आप हमारी कैद में हैं।
मैं समझ गया।
प्यारे बच्चो! यहां तक की कहानी आप मनोज कॉमिक्स के पिछले दो अंकों "राम-रहीम और ब्लैक फाइल" और "राम-रहीम और खून की प्यास" में पढ़ चुके हैं। अब आगे पढ़ें।

चलिए डैडी! हाथ उठाकर नीचे उतरिये। दुश्मनों को यही मालूम होना चाहिए कि आप हमारी गिरफ्त में हैं।
ठीक है!
गुड! हमारे एजेन्ट कर्नल को कवर करके वेन की ओर ले जा रहे हैं।
चलो, हमारी सिरदर्दी खत्म हुई।
अब हमारे लिए बॉस का क्या आदेश है?
अड्डे नम्बर दो पर चलो। अब वहीं चलकर मौज मनायेंगे।
और फिर उनकी कार वापस लौट पड़ी।
इधर –
मुबारक हो डबल एजेन्ट! क्या ब्लैक फाइल भी हाथ लगी?
यस मैडम, यह रही।
गुड! लाओ, फाइल मुझे दे दो।
सॉरी मैडम! जब तक हमारा पारिश्रमिक हमें नहीं मिल जाता, तब तक यह फाइल हमारे पास ही रहेगी।

हुम्म! यहां इनसे उलझना ठीक नहीं रहेगा, वरना कर्नल भी हाथ से निकल सकता है।
ठीक है। तुम दोनों कर्नल के साथ पीछे बैठ जाओ। अड्डे पर पहुंचकर तुम्हारा पारिश्रमिक तुम्हें दे दिया जायेगा।
थैंक्यू मैडम!

फिर राम-रहीम कर्नल राघव के साथ वेन के पिछले हिस्से में सवार हो गये...

... और वेन वहां से चल पड़ी।
लगभग बीस मिनट बाद वेन रुकी।
कर्नल ने कोई गड़बड़ तो करने की कोशिश नहीं की।
नहीं।
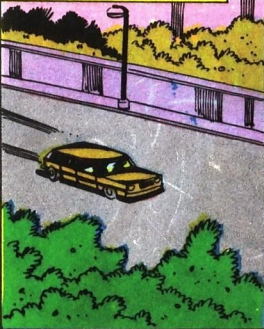
चलो नीचे आ जाओ। हम अपनी मंजिल पर पहुंच चुके हैं।
ओ.के. मैडम!

रॉकी, तुम जाकर बॉस को सूचित कर दो कि हम आ पहुंचे हैं।
यस मैडम!

राम-रहीम व मैडम के आदमी कर्नल राघव के साथ नीचे उतर आये।

सुनो कर्नल! यहां किसी किस्म की चालाकी दिखाने की कोशिश मत करना। क्योंकि जिस जगह तुम खड़े हो, वहां से निकलना कतई नामुमकिन है।
आखिर तुम लोग मुझसे चाहते क्या हो?

अभी कुछ देर में तुम्हें सबकुछ मालूम हो जायेगा। आओ मेरे साथ।
ओह!

और वे सब उस युवती के पीछे-पीछे एक तरफ चल दिये।
एक गैलरी से गुजरकर...

हुम्म! यह तो कोई अण्डर ग्राउण्ड गैराज मालूम पड़ता है।

...वे एक लिफ्ट के पास रुके।
चलो, सब भीतर चलो

जब सब लिफ्ट में प्रवेश कर गये तो लिफ्टमैन ने शटर बन्द कर लिफ्ट को चालू कर दिया।

लिफ्ट चौथी मंजिल पर रोकी गई।

मेरे पीछे आओ।
लगता है, यह अड्डा भी कई मंजिली इमारत के भीतर है।

आखिरकार उनका यह सफर एक हॉल में जाकर खत्म हुआ।
वैल डन मैडम शिवाना! मुझे प्रसन्नता है कि तुमने और तुम्हारे ट्रेण्ड किये एजेण्टों ने अपना कार्य बखूबी अंजाम दिया है।
थैंक्यू मास्टर!

मास्टर! यह रहे कर्नल राघव! फाइल एजेण्ट राम के पास है।
गुड! लाओ, फाइल मुझे दो राम।

जहां तक मेरा विचार है, यह शाकाल हरगिज नहीं हो सकता। शाकाल कम-से-कम कद-बुत में इतना पतला और लम्बा नहीं था।
क्या सोचने लगे राम? फाइल मास्टर के हवाले करो।
नहीं। वायदे के मुताबिक पहले हमारा पारिश्रमिक हमारे हवाले करो।
तड़ाक्!
यू फूल! मास्टर की शान में गुस्ताख्वी करते हो।
आह!
भइया!
कुतिया, तूने मेरे भाई पर हाथ उठाया। मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा।
हैं।
खबरदार! जहां हो, वहीं रुक जाओ, वरना...।
नो मैडम! गोली मत चलाना।
लेकिन मास्टर...।
कुछ नहीं, इन्हें इनका पारिश्रमिक देकर इनसे फाइल ले लो। हम अपने खिदमतगारों के साथ कोई बुरा सुलूक नहीं करते।
जी!

लो, गिन लो, पूरे पचास हजार हैं।
मुझे विश्वास है, यह रकम पूरी ही होगी।
राम ने रुपये अपने वस्त्र की अन्दरूनी जेबों में ठूंस लिये।
लाओ, अब फाइल मेरे हवाले करो।
ठहरो, पैकेट खोलकर देता हूं।
अगले ही पल –
खबरदार, कोई भी अपनी जगह से हिलने की कोशिश न करे, वरना मैं मैडम की खोपड़ी से भेजा बाहर निकाल दूंगा।
क... क्या?
हुम्म!
???
फिर इससे पहले कि कोई हरकत में आता, कर्नल राघव और रहीम ने भी अपनी जेबों से रिवॉल्वर निकालकर अन्य लोगों पर तान दिये।
खबरदार, सब अपने हाथ ऊपर उठा लो।
और प्यारे नकाबपोश! तुम भी जरा अपने चेहरे से पर्दा उठा दो, ताकि हमें तुम्हारा दीदार हो सके।
हा–हा–हा! तो मेरा संदेह ठीक ही निकला। तुम हमारे एजेण्ट चन्द्र और श्याम नहीं हो।
तुम बिल्कुल ठीक समझे मिस्टर शाकाल! हम चन्द्र और श्याम नहीं, बल्कि असली राम-रहीम हैं।
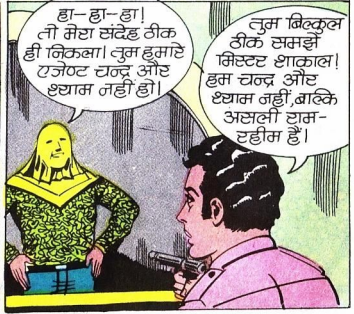
तुम भूल कर रहे हो रहीम। यह शाकाल नहीं, कोई और है।
क्याऽऽऽ?
चलो मिस्टर नकाबपोश, जल्दी से नकाब उलट दो, वरना मैं तुम्हारी इस मासूम-सी गुड़िया को गोली मार दूंगा।
मेरे चेहरे पर पर्दा ही पड़ा रहने दो राम, वरना मेरा चेहरा देखकर तुम्हें गश आ जायेगा।

तुम हमारी चिंता न करो प्यारे पर्दानशीं। हम गश न खाने का टॉनिक पीकर आये हैं। तुम पर्दा हटाओ।
ठीक है। तो लो..।
कहकर...

...नकाबपोश ने अपने चेहरे से नकाब उलट दी।
हैं!
फोमांचू!
आंय! चचा, तुम...!
हा-हा-हा!

क्यों भतीजो, खा गये न गश।
तुम ठीक कह रहे हो चचा, लेकिन हमारी समझ में यह नहीं आया कि शाकाल बनकर तुम क्या चक्कर चला रहे हो?

चक्कर चलाया नहीं है, बल्कि चलाना चाहता था...

...शाकाल वास्तव में मर चुका है और मैं चाहता था कि मैं उसके नाम का सहारा लेकर इस देश की पुलिस और कानून को कुछ परेशान करूं...
...ताकि तुम दोनों पुनः शाकाल को ढूंढ़ते फिरो और मैं तुम दोनों से अपनी पिछली हार का बदला ले सकूं। इसीलिए मैंने शाकाल से संबंधित फाइल्स उड़ानी चाही थी, लेकिन तुम दोनों के आजाद होने के कारण अब मुझे अपना प्रोग्राम बदलना पड़ेगा।
और तुम मेरे पिताजी का अपहरण क्यों करना चाहते थे?
इनसे मुझे बॉर्डर पर तैनात सेना के कुछ गुप्त भेद मालूम करने थे...
...शाकाल की फाइल तो मेरे लिए बेकार हो गई, लेकिन तुम्हारे पिता अब भी मेरे लिए महत्त्वपूर्ण हैं।
नहीं चचा, हमारे रहते अब तुम अंकल को छू भी नहीं पाओगे।
हा-हा-हा! तुम्हारा यह भ्रम भी अभी टूट जायेगा।
फोमांचू! तुम तो कहते थे कि मुझे अपराध करना पसन्द नहीं, फिर यह सब?
मैंने तुमसे ठीक ही कहा था। मैं अपराध धन-दौलत के लिए नहीं, बल्कि महज शौक पूरा करने के लिए करता हूं। और यकीन मानो, मेरे इस कार्य के पीछे केवल मनोरंजन है, कोई लालच नहीं।
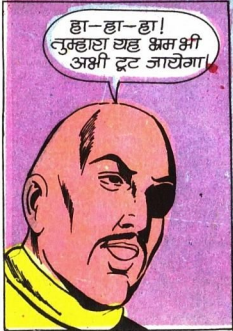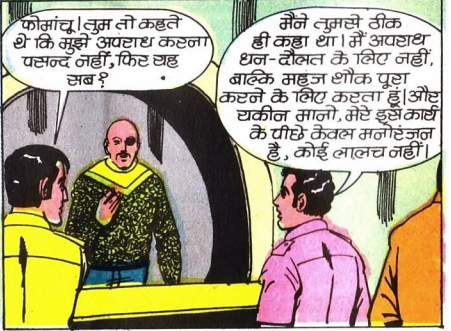
क्या मेरे पिता का अपहरण कर उनसे हमारे देश के सैनिक राज जानने के पीछे तुम्हारा कोई लालच या स्वार्थ नहीं।

नहीं। मैं यह राज केवल अपने देश फिंचलैण्ड की तरक्की और भलाई के लिए जानना चाहता हूं, न कि तुम्हारे देश के अहित के लिए...

...एक प्रकार से यह समझ लो कि मैं अपने देश की सुरक्षा के सम्बन्ध में तुम्हारे पिता से मदद ले रहा हूं।

लेकिन यह मेरे लिए गद्दारी होगी, और मैं मरते दम तक अपने देश से गद्दारी नहीं करूंगा।
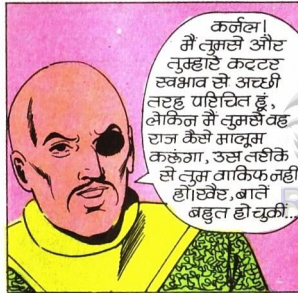
कर्नल! मैं तुमसे और तुम्हारे कट्टर स्वभाव से अच्छी तरह परिचित हूं, लेकिन मैं तुमसे वह राज कैसे मालूम करूंगा, उस तरीके से तुम वाकिफ नहीं हो। खैर, बातें बहुत हो चुकीं...

...राम, अब मैडम शिवाना को छोड़ दो और अपने-अपने रिवॉल्वर फर्श पर डाल दो।

हरगिज नहीं!

लेकिन राम-रहीम यह नहीं भांप सके कि फोमांचू का हाथ कब सामने पड़ी मेज के एक गुप्त हिस्से में जा चुका था।
और जब वह हाथ बाहर आया।
हा-हा-हा! शायद तुम दोनों इस चक्र का करिश्मा भूल चुके हो भतीजो।
ओह!
अपने-अपने रिवॉल्वर फेंक दो, वरना तुम्हारी गर्दन गेंद की तरह फर्श पर लुढ़क रही होगी।
सुनो चचा, यदि तुमने हम पर चक्र का प्रयोग किया तो तुम्हारी यह मैडम भी फर्श पर लुढ़क जायेगी।
हुम्म! तो तुम यूं नहीं मानोगे।
कहने के साथ ही फोमांचू ने मेज के नीचे लगा एक गुप्त बटन दबा दिया।
अगले ही पल-
अरे!
हैं!
ओह!
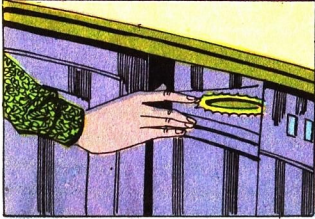
पलक झपकते ही तीनों के रिवॉल्वर छत पर लगी लोहे की एक गोल प्लेट से जाकर चिपक गये।
ओह! चुम्बकीय प्लेट!
हा-हा-हा!
थैंक्यू मास्टर!
???
!!!
क्यों भतीजो, अब क्या विचार है?
चचा, जब तक जान है, तब तक जहान है।
कहने के साथ ही...
...रहीम वहीं से किसी स्प्रिंग के समान उछला और हवा में तैरता हुआ किसी राकेट की तरह फोमांचू की तरफ बढ़ा।
मैं कहता हूं वहीं रुक जाओ!
???
!!!
और बाद में जो परिणाम निकला, वह रहीम के प्रतिकूल था।
आह!
धड़ाक!
रहीम को ऐसा महसूस हुआ जैसे उसका सिर किसी इंसान के सीने से नहीं, बल्कि लोहे की दीवार से टकराया हो।
अगले ही पल वह फोमांचू के सीने से टकराकर उसी गति से वापस उछल गया, जिस गति से वह आया था।
रहीम!
हा-हा-हा!
???
!!!

धड़ाम्!
हाय! मर गया।
रहीम, मेरे भाई! तुम ठीक तो हो ना।

ओह! यह तो बेहोश हो गया!
इस मूर्ख को मैंने पहले ही चेतावनी दी थी, लेकिन यह नहीं माना। भूल गया कि मेरा पूरा शरीर सुरक्षा के फौलादी घेरे में है।
गार्ड्स! राम को बांध दो और कर्नल राघव को लेकर यहां से निकल चलो।
यस मास्टर!
हुम्म!
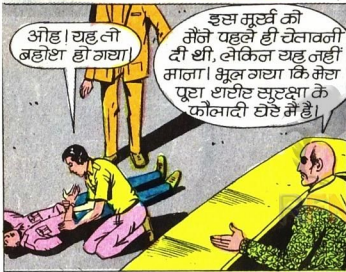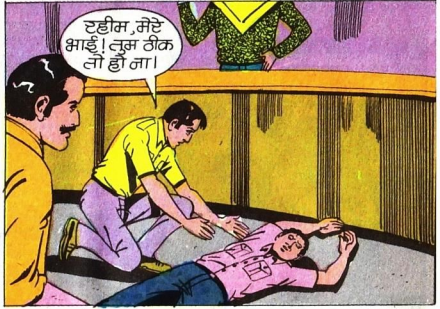
मैडम शिवाना, तुम इस अड्डे में टाइम बम फिट कर दो। अब यह अड्डा हमारे लिए बेकार हो चुका है। समय बीस मिनट का रखना।
यस मास्टर!
कहकर मैडम शिवाना वहां से चली गई।

फोमांचू के आदेश का पालन तुरन्त हुआ।
राम, मैं तुम्हें और रहीम को जिंदा छोड़े जा रहा हूं। बीस मिनट बाद मेरा यह अड्डा तबाह हो जायेगा। यदि बच सको तो मुझे बड़ी खुशी होगी।
चचा! मैं कसम खाता हूं। एक दिन मैं तुम्हें बहुत भयानक मौत मारूंगा।

हा-हा-हा! उस मनहूस दिन का मुझे बड़ी बेचैनी से इन्तजार रहेगा।

तभी मैडम शिवाना वहां आ पहुंची-
मास्टर, मैंने टाइम बम फिट करवा दिये हैं, जो ठीक बीस मिनट बाद फटेंगे।
गुड! अब निकल चलो यहां से।

बॉय राम! यदि तुम जीवित रहे तो फिर मुलाकात होगी।
हे ईश्वर! मेरे बच्चों की रक्षा करना।

फोमांचू आदि के वहां से जाने के पश्चात्-
रहीम-रहीम, होश में आओ रहीम। हम इस समय खतरे में हैं।
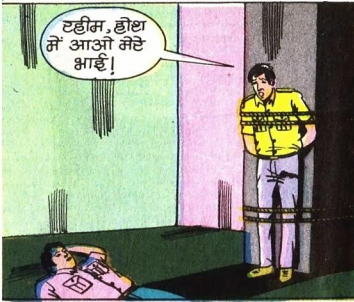
रहीम, होश में आओ मेरे भाई!
ईश्वर! क्या तकदीर में हमारा अन्त इसी तरह लिखा है।
लेकिन दस मिनट बाद रहीम को स्वयं ही होश आ गया।
आहा! तुम्हें होश आ गया रहीम।
आह!
अरे! राम भइया, तुम इस हालत में। और फोमांचू आदि कहां गये?
समय बहुत कम है रहीम। पहले मुझे आजाद करो। यह अड्डा किसी भी समय नष्ट हो सकता है।
ओह!
फोमांचू आदि कहां गये राम भइया?
वे डैडी को लेकर यहां से जा चुके हैं। फोमांचू ने तो अपनी ओर से हमारी मौत का पूरा प्रबन्ध कर दिया था...

रहीम ने फर्श पर पड़ी ब्लैक फाइल उठा ली थी, जिसे फोमांचू वहीं छोड़ गया था।

फिर वे दोनों उस इमारत से निकलकर कुछ दूर ही पहुंचे होंगे कि इमारत में होने वाले भयानक विस्फोटों से समूचा वातावरण दहल उठा।

चिंता मत करो। मैंने डैडी और मैडम शिवाना की जेबों में जीरो कैमरा कैप्सूल डाल दिये थे। अतः वे जहां भी होंगे, हमें उनके बारे में इण्डीकेटर से मालूम हो जायेगा।
वाह!
उसके बाद राम ने अपने जूते की एड़ी से छोटा-सा, लेकिन शक्तिशाली ट्रांसमीटर निकाला और चीफ मुखर्जी से सम्पर्क जोड़ने लगा।
हैलो-हैलो. अंकल डार्क! डबल एजेण्ट 00½ कालिंग।
शीघ्र ही सम्पर्क स्थापित हुआ।
यस, अंकल डार्क इज हियर। ओवर!
चीफ अंकल! मैं राम बोल रहा हूं।
कहकर राम ने चीफ मुखर्जी को सारा किस्सा बता दिया...
...और अन्त में बोला-
अंकल, फोमांचू डैडी को ले गया है। वह उनसे कुछ सैनिक राज जानना चाहता है।
ओह! यह तो बहुत बुरा हुआ राम।
आप चिंता न करें अंकल! हम जल्दी ही उन्हें फोमांचू की कैद से छुड़ा लेंगे। मैंने डैडी और फोमांचू की एक साथिन की जेबों में जीरो कैमरा कैप्सूल डाल दिये हैं...
...अतः वे जहां भी होंगे या जायेंगे, हमें टी.वी. इण्डीकेटर द्वारा उस स्थान का पता चल जायेगा।
वैरी गुड! यह तुमने बड़ी समझदारी का काम किया है। अब तुम्हारा क्या प्रोग्राम है.

...वैसे तुम्हारे कहे मुताबिक दक्षिण क्षेत्र में स्थित इमारत पर छापा मारकर पुलिस ने उन लोगों को गिरफ्तार कर लिया है, जिन्होंने तुम्हें कैद कर रक्खा था।
क्या उन लोगों ने कुछ बताया।
नहीं। वे स्थानीय साधारण बदमाश हैं। उन्हें फोमांचू या शाकाल के बारे में कुछ मालूम नहीं है। यानी फोमांचू ने उन्हें साधारण मोहरों के रूप में इस्तेमाल किया था।
और चन्द्र का क्या हुआ?
उसे भी मैंने पुलिस के हवाले कर दिया है।
ठीक है अंकल! आप हैडक्वार्टर में ही हमारा इन्तजार कीजिए। हम यहां से सीधे वहीं पहुंच रहे हैं...
...और हां, आप टी.वी. इंडीकेटर के साथ-साथ हमारे सुपर सूट और फोमांचू के चक्र का एण्टी लॉकेट भी तैयार रखियेगा।
ठीक है।
तब राम ने ट्रांसमीटर ऑफ करके जूते के तले में डाल लिया।
तब तक तबाह होती इमारत के इर्द-गिर्द काफी भीड़ एकत्रित हो चुकी थी और पुलिस भी वहां पहुंचकर भीड़ को नियंत्रित करने की कोशिश कर रही थी।
धड़ाम!
पीछे हटो।
???
!!!

राम-रहीम ने वहां रुकना बेकार समझ एक टैक्सी पकड़ी और हैडक्वार्टर की ओर चल पड़े।
लगभग बीस मिनट बाद वे हैडक्वार्टर में चीफ मुखर्जी के सामने थे।
लो, यह रहे तुम दोनों के सुपर सूट और लॉकेट। जल्दी से इन्हें पहन लो।
राम-रहीम जल्दी से सुपर सूट पहनने लगे।
राम! हमारा टी.वी. इण्डीकेटर दर्शा रहा है कि फोमांचू कर्नल राघव के साथ उत्तर में तीन किलोमीटर के क्षेत्र में किसी मकान में मौजूद है।
पिक... पिक...!
गुड! फिर तो हमें उन तक पहुंचने में कोई ज्यादा देर नहीं लगेगी।
शीघ्र ही राम-रहीम सूट और लॉकेट पहनकर तैयार हो गये। ये वही लॉकेट थे, जिन्हें प्रोफेसर भटनागर ने तैयार करके उन्हें दिये थे।
आइये चीफ! अब चलें। हमें जल्द-से-जल्द फोमांचू तक पहुंचना है।
ठीक है। चलो। बाहर मेरी विशेष कार भी तैयार खड़ी है।
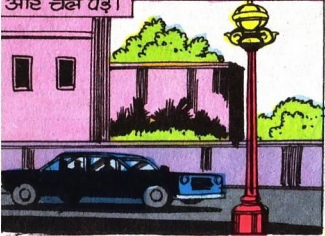
फिर कुछ ही देर बाद चीफ मुखर्जी की विशेष कार उत्तर दिशा में तूफानी गति से दौड़ी जा रही थी।
हम ठीक दिशा में चल रहे हैं अंकल! इण्डीकेटर भलीभांति काम कर रहा है।
लगभग बीस मिनट बाद वे एक दुमंजिली इमारत के सामने थे।
राम, इण्डीकेटर दर्शा रहा है कि तुम्हारे डैडी व वह युवती इसी इमारत में हैं।
अंकल! आप
ट्रांसमीटर द्वारा मिलिट्री फोर्स से सम्बन्ध स्थापित कर इस इमारत को घेरने का आदेश दीजिए! जब तक फोर्स यहां नहीं पहुंच जाती, हम यहीं इन्तजार करेंगे।
ठीक है!
चीफ मुखर्जी ने ट्रांसमीटर द्वारा मिलिट्री के एक विशिष्ट ऑफिसर से कॉन्टेक्ट कर उन्हें सारी स्थिति से अवगत कराया और उन्हें फोर्स सहित तुरन्त वहां पहुंचने का निर्देश दिया।
ओ.के. मिस्टर मुखर्जी! हम पन्द्रह मिनट में वहां पहुंचते हैं।
थैंक्यू कर्नल!
और बीस मिनट के भीतर-भीतर मिलिट्री के असंख्य सशस्त्र जवानों ने कर्नल टी. रामचन्द्रन के नेतृत्व में उस इमारत को चारों तरफ से घेर लिया।
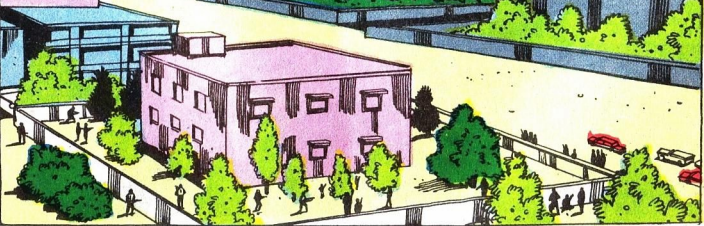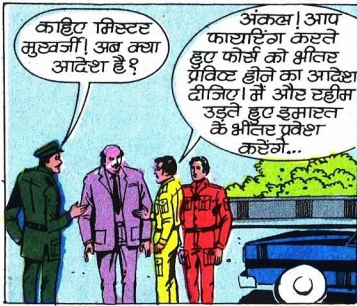
कहिए मिस्टर मुखर्जी! अब क्या आदेश है?
अंकल! आप फायरिंग करते हुए फोर्स को भीतर प्रविष्ट होने का आदेश दीजिए। मैं और रहीम उड़ते हुए इमारत के भीतर प्रवेश करेंगे...
...ध्यान रहे, कोई भी मुजरिम बचकर नहीं निकलना चाहिए। विशेष रूप से फोमांचू और मैडम शिवाना!
ऐसा ही होगा बेटे, लेकिन तुम दोनों अपना ख्याल रखना!

इधर इमारत के एक लम्बे-चौड़े कमरे के भीतर-
कर्नल, अब भी वक्त है! मेरा कहा मान लो और जो जानकारी मैं चाहता हूं, वह मुझे दे दो।
हरगिज नहीं! मैं मरते दम तक तुम्हें कुछ नहीं बताऊंगा। चाहे तुम मेरे टुकड़े-टुकड़े ही क्यों न कर दो।

तो ठीक है! मैं तुम्हें मारूंगा नहीं। लेकिन तुम्हारी ऐसी दशा अवश्य कर दूंगा कि तुम न जीवित कहलाओगे और न ही मरे हुए।
कहने के साथ ही फोमांचू ने...
...एक छोटी-सी विचित्र किस्म की गन निकालकर कर्नल राघव पर तान दी।
तुम कल्पना भी नहीं कर सकते कर्नल कि मेरी ईजाद की हुई यह गन तुम्हारा क्या हश्र करेगी...

...इस गन से निकलने वाली किरणें तुम्हारा ऐसा हश्र करेंगी, जिसका इस दुनिया में कोई इलाज नहीं होगा।
नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते।

तभी वहां का वातावरण गोलियों और विस्फोटों की भयानक आवाज़ों से दहल उठा।
धड़ाम्!
धुड़म्!
धांय... धांय...!
अरे! यह गोलीबारी कैसी?
!!!

उसी समय फोमांचू का एक आदमी घबराया हुआ वहां पहुंचा।
गजब हो गया मास्टर! मिलिट्री के असंख्य जवानों ने हमारे इस अड्डे को चारों तरफ से घेर लिया है और गोलीबारी करते हुए भीतर घुसने की कोशिश कर रहे हैं।
क्याऽऽऽ?

जरूर राम-रहीम उस इमारत से बच निकले होंगे और यह कार्य उनका ही होगा। लेकिन उन कम्बख्तों को मेरे इस गुप्त अड्डे का पता कैसे चला?
हमारे लिए क्या आदेश है मास्टर?
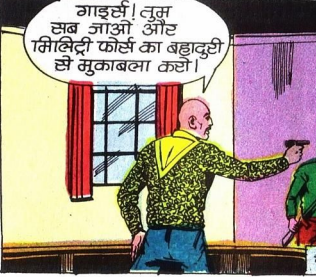
गार्ड्स! तुम सब जाओ और मिलिट्री फोर्स का बहादुरी से मुकाबला करो।
यस मास्टर!
फोमांचू के सभी साथी तुरन्त वहां से चले गये...

...और बाहर पोजीशन लेकर मिलिट्री के जवानों का मुकाबला करने लगे।
धांय...धांय...
तड़...तड़...तड़..!
आह!
उफ!
हा—हा—हा! देखा फोमांचू, भगवान के घर देर है, पर अंधेर नहीं। अब तुम्हारा अन्त निकट ही है।
बन्द करो अपनी बकवास मुझे मारना तो दूर, कोई मुझे छू भी नहीं सकता...
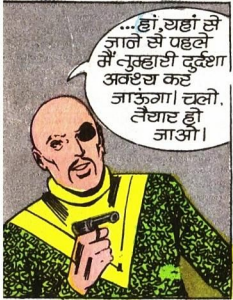
...हां, यहां से जाने से पहले मैं तुम्हारी दुर्दशा अवश्य कर जाऊंगा। चलो, तैयार हो जाओ।

परन्तु इससे पहले कि वह अपनी गन का घोड़ा दबा पाता—
छनाक्!
खनाक्!
अरे!

ओह! राम-रहीम!
आहा! मेरे बच्चे!
अरे!

धांय!
खटाक्!
आह!
रहीम, तुम मैडम को संभालो। मैं चचा की खैर-खबर लेता हूं।
बहुत अच्छा भइया!

तभी शिवाना ने रिवॉल्वर निकालकर राम-रहीम पर बेतहाशा फायरिंग करनी आरम्भ कर दी।
धांय... धांय...!
लेकिन राम-रहीम पर गोलियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
हैं!
धांय... धांय...!
बेकार है शिवाना! उनके शरीर पर जो सूट हैं, उनके कारण उन पर गोलियों का कोई असर नहीं होगा।
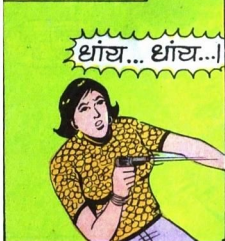
लेकिन हमारे घूसों-लातों का तुम लोगों पर जरूर असर होगा।
खटाक्!
आह!

फिर रहीम मैडम से उलझ पड़ा...
उफ!
ढिशुम!
...और राम चचा से-
शक्ति में हम दोनों बराबर हैं चचा! एक साधारण इंसान की तरह तुम्हारे चक्र की काट भी मेरे गले में पड़ी है, यानी एण्टी लॉकेट...

...अब बोलो, किस तरह का मुकाबला करना चाहते हो।
इनसे उलझना फिलहाल ठीक नहीं होगा। मुझे निकल भागना चाहिए।

क्या सोचने लगे च...।

धड़ाक!
आह...ह...!

फिर इससे पहले कि राम संभलकर उठ पाता, रोमांचू उड़ता हुआ खिड़की की ओर बढ़ गया।
ओह!

अगले ही पल-
ठहर जा शैतान! मैं तेरा पीछा पाताल तक भी नहीं छोड़ूंगा।

ओह! फोमांचू भाग रहा है।

एक पल भी नष्ट न कर रहीम भी उनके पीछे उड़ चला।
अंकल! आप मैडम को संभालिये। मैं भी फोमांचू के पीछे जा रहा हूं।
चिंता मत करो बेटे! अब मैं इस नागिन को इस देश के सिपाहियों के फौलादी हाथों की विशेषता बताऊंगा।

वह एक विचित्र नजारा था।
???
???

मैं कहता हूं चचा. अपने आपको कानून के हवाले कर दो। अब तुम बचकर नहीं जा सकोगे।
उंह!
कहकर फोमांचू ने अपना सुदर्शन चक्र निकाल लिया।

चकायक राम-रहीम ने अपनी उड़ने की गति तेज की और-

और आकाश में एक रोमांचक युध्द आरम्भ हो गया।

हाय!

आई...ई...ई!
खड़ाक्!

आह!
धड़ाक्!

यह शैतान इस तरह काबू में नहीं आने वाला।

अगले ही पल राम को कुछ ध्यान आया और उसने अपने वस्त्र से एक गन निकाल ली।
रहीम, तुम इसे छोड़कर अलग हट जाओ। अब मैं इसका इलाज दूसरे ढंग से करूंगा।
ओह!
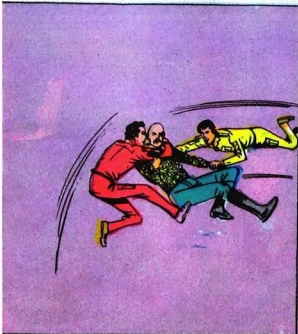
रहीम तुरन्त फोमांचू को छोड़कर एक तरफ हट गया। लेकिन इससे पहले कि फोमांचू कुछ समझ पाता, राम ने अपनी गन का ट्रेगर दबा दिया।
खट!
थूं...थूं...थूं...!

और अगले पल-
ओफ!

पलक झपकते ही फोमांचू मूर्छित हो धरती की ओर लुढ़कने लगा। चक्र भी उसके हाथ से निकल चुका था।

रहीम, संभालो उसे। वह बेहोश हो चुका है।

रहीम तेजी से फोमांचू की ओर झपटा...

...और मूर्छित फोमांचू को अपनी बांहों में संभाल लिया।

राम ने भी जल्दी से उनके निकट पहुंचकर फोमांचू को संभाल लिया।
कम्बख्त! बड़ी मुश्किल से काबू में आया है। चलो, अब चलकर इसे चीफ के हवाले करें।

और दोनों फोमांचू को लेकर वापस इमारत की ओर उड़ चले।

उधर तब तक सैनिक मैडम सहित फोमांचू के बचे-खुचे साथियों को अपनी गिरफ्त में ले चुके थे।
लो, हमारे शेर इनके सरगना को भी पकड़ लाये।
ओह! आखिरकार मास्टर भी पकड़े गये।
???
!!!

राम-रहीम फोमांचू को लिए नीचे उतरे।
लीजिए संभालिये अंकल! आपका शिकार हाजिर है। लेकिन यह बेहोश है। जरा संभालकर!
वेल डन माई ब्वाय, वेलडन!
शाबाश मेरे बच्चो!
लो कर्नल, संभालो इसे, लेकिन सावधान, इस बार यह फरार न होने पाये।
चिंता मत कीजिये मिस्टर मुखर्जी! इस बार यह हमारी कस्टडी में रहेगा।
ले चलो इन सबको।
और अगले दिन के तमाम समाचार-पत्र एक बार फिर राम-रहीम की भूरि-भूरि प्रशंसा से भरे पड़े थे।
TIMES OF INDIA
RAM-RAHIM
हिंद केसरी
समाचार पत्र
फोमांचू गिरफ्तार
समाप्त